डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 04-07-2020

विषय- संस्कृत व्याकरण

पारिभाषिक शब्दावली

1. अपृक्त- अपृक्त एकाल प्रत्ययः- एकाल प्रत्ययः यः सोऽपृक्त संज्ञः स्यात्। अर्थात्-एक अल् रूप जो प्रत्यय, वह अपृक्त संज्ञक हो, अर्थात् उसकी अपृक्त संज्ञा हो। उदाहरण 'सखान् स्' यहां 'स' यह प्रत्यय है, और एक अल् रूप है, अतः इसकी अपृक्त संज्ञा हुई ।

2. गति- गतिश्च-प्रादयः क्रिया योगे गति संज्ञाः स्युः । गतिकारकेतर पूर्वपदस्य यण् नेष्यते-शुद्धधियौ।
   अर्थात प्र आदि क्रिया के योग में गति संज्ञक (भी)हो । 'प्रधी' शब्द में 'प्र' का 'धी' क्रिया के साथ योग है, अतः इसकी गति संख्या होगी ।
   'भी' कहने से गति और उपसर्ग, दोनों संज्ञाओं का समावेश होता है। 'प्रधी' में 'प्र' उपसर्ग भी है और गति भी । फल दोनों संज्ञाओं का भिन्न-भिन्न है।
   'शुद्धाधीर्यस्य सः' इस विग्रह से सिद्ध शुद्धी धी (शुद्ध बुद्धि वाला) शब्द में 'शुद्ध' शब्द प्रादि नहीं, अतः गति संज्ञा न होगी।

3. पद- "सुप्तिड़न्तं पदं"प्राह पाणिनि मुनि सत्तमः । यथा-"रामः", "भवति"
   मुनिया में श्रेष्ठ पाणिनि सुबन्त और तिड़न्त को पद कहते हैं, अर्थात् सुबन्त और तिड़न्त शब्दों को पद कहा जाता है। जैसे- सुबन्त-राम, तिड़न्त भवति।
   सुबन्तं तिड़न्तं च पद संज्ञं स्यात्।
   अर्थात सुबन्त और तिड़न्त की पद संज्ञा होती है। सुप जिसके अंत में हो उसे सुबन्त और तिड् जिसके अंत में हो उसे तिड़न्त कहा जाता है । सुप् और तिड् प्रत्यय है । उदाहरण- रामः, भवति इत्यादि । रामः सुबन्त है और भवति तिड़न्त है।

4. सवर्ण- तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्-ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तरप्रयत्नश्चेत्येतद् द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः सवर्णं संज्ञं स्यात्।
   अर्थात तालु आदि स्थान और आभ्यंतर प्रयत्न ये दोनों जिस- जिस वर्ण के समान हो वे वर्ण परस्पर सवर्ण संज्ञा वाले होते हैं।
5. टि- अचोऽन्त्यादि टि-अचां मध्ये योऽन्त्यः, से आदिर्यस्य तत् टि संज्ञं स्यात्।

अर्थात् में जो अन्त्य, वह है आदि में जिससे उस समुदाय की टि संज्ञा हो। जैसे-" मनस" में अंत्य अच् है, न कारोत्तरवर्ती अकार, वहआदि में है ,'अस्'इस समुदाय के, इसलिए 'अस्' की टि संज्ञा होगी।'शक' में अन्त्य अच् है ककारोत्तरवर्ती अकार, वह किसी के आदि में नहीं । ऐसी दशा में देवदत्तस्य एक: पुत्र: स एव जेष्ठ: स एव कनिष्ठ:" इस न्याय से वह अपने ही आदि में है । इसलिए अ की टि संज्ञा हुई । इसी न्याय को व्यपदेशिवद् भाव भी कहते हैं । अमुख्य में मुख्य जैसा व्यवहार करने को 'व्यपदेशिवद्भाव' कहा जाता है। जब यहां अन्त्य अच् के आदि वाला असली समुदाय न मिला तो उसी अकेले में मुख्य समुदाय जैसा व्यवहार करके टि संज्ञा कर दी।

6. प्रगृह्य- ईदूदेद्द्विवचन प्रगृह्यम्-ईदूदेदन्तं द्विवचनम् प्रगृह्य संज्ञं स्यात्। हरी एतौ ,विष्णु इमौ, गंगे अम् ।

अर्थात ईकारान्त,ऊकारान्त तथा एकारांत द्विवचनान्त पद प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।

प्रगृह्य संज्ञा का फल "प्लुत प्र गृह्या अचि॰ सूत्र से प्रकृति भाव है । जैसे- हरी+एतौ (ये दो हरि) यहां हरी यह पद हरि शब्द का प्रथमा का द्विवचन होने से दीर्घ ईकारान्त है ।अतः प्रगृह्य संज्ञा हुई । तब प्रकृति भाव हुआ।यहां यण् कार्य नहीं हुआ । इसी तरह अन्य उदाहरण- विष्णू इमौ, गंगेअम्, कवी आगच्छत: आदि।

7. सर्वनामस्थान-शि सर्वनामस्थानम्-शि इत्येतत् उक्त संज्ञंस्यात्।

अर्थात 'शि' यह सर्वनाम स्थान संज्ञक हो। जैसे -ज्ञान +इ, यहां शि की सर्वनामस्थान संज्ञा हुई।

8. सम् प्रसारण- इग्यण:सम्प्रसारण-यण: स्थाने प्रयुज्यमानो य: इक् स सम्प्रसारण संज्ञ:स्यात्।

अर्थात्-यण् के स्थान में प्रयुज्यमान् जो इक् वह संप्रसारण संज्ञक होता है। जैसे- "वाह उठ" सूत्र से 'विश्ववाह' में वाह के यण् वकार के स्थान में ऊकार इक् प्र युक्त होता है उसकी संप्रसारण संज्ञा होती है।

9. निष्ठा--क्त-क्तवतू निष्ठा -एतौ निष्ठा संज्ञौ स्त: ।

अर्थात क्त और क्तवतू प्रत्ययों की निष्ठा संज्ञा होती है।